IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

अनुसूचित जातियों के सामाजिक प्रस्थिति उन्नयन में आर्य समाज की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन (विकासखण्ड पोखड़ा–वीरोंखाल के सन्दर्भ में)

सुमन कुमार
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
समाजशास्त्र
पी.एन.जी. राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, रामनगर, नैनीताल

सारांश–प्रस्तुत अनुसंधान आलेख – अनुसूचित जातियों के सामाजिक प्रस्थिति उन्नयन में आर्य समाज की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन पर केन्द्रित है। जिसमें अध्ययन क्षेत्र के लिए उत्तराखण्ड के जिला पौड़ी गढ़वाल के दो विकासखण्ड पोखडा और वीरोंखाल को लिया गया है। आर्य समाज की स्थापना सन् 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती के द्वारा की गई। आर्य समाज एक सुधारवादी, सामाजिक आन्दोलन के रूप में राष्ट्र की सेवा के लिए स्थापित हुआ, जिसका मुख्य उद्देश्य हिन्दू धर्म में सुधार करना था। आर्य समाज का आदर्श वाक्य ''कृण्यन्तो विश्रर्यम'' (सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाओ)। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य हिन्दुओं में जाति पर भेदभाव का समाप्त करना तथा वैदिक ज्ञान परम्परा को पुर्नस्थापित करना रहा हें आर्य समाज में मूर्ति पूजा, अन्धविश्वासों आदि का कोई स्थान नहीं। शैक्षणिक–आध्यात्मिक–आर्थिक–राजनीतिक उन्नति तथा राष्ट्रीय एकता अखण्डता के कार्यों को आर्य समाज परम्परागत रूप से करता आ रहा है। आर्य समाज का सबसे बड़ा शैक्षणिक संस्थान गुरूकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय उत्तराखण्ड के हरिद्वार नामक पवित्र स्थान पर है। आर्य समाज भारत के लगभग सभी राज्यों में समाज तथा मानव कल्याण के कार्यों को करता चला आ रहा है। जो देश के शहरी कस्बों, गांवों में सामाजिक सुधार का कार्य करता है।

उत्तराखण्ड के सन्दर्भ में आर्य समाज प्रमुख पौराणिक हिन्दू समाज का सुधारवादी आन्दोलन रहा है। गढ़वाल तथा कुमाऊँ क्षेत्रों में आर्य समाज ने अनुसूचित जाति के समाजों को मुख्यधारा में लाने के लिए सराहनीय प्रयास तथा कार्य किये हैं। इन कार्यों का भारत की आजादी

की दिशा में व्यापक प्रभाव पड़ा और वर्तमान समय में यह आन्दोलन सामाजिक तथा राष्ट्रीय एकता के लिए लोगों को प्रेषित करता है। कुमाऊँ में खुसीराम टम्टा, मुंसी हरिप्रसाद टम्टा तथा गढ़वाल में जयानन्द भारती आदि प्रमुख शिल्पकार समाज के व्यक्तियों ने आर्य समाज के माध्यम से गढ़वाल और कुमाऊँ में अनुसूचित जातियों के उत्थान हेतु कई सामाजिक कार्य किये। इस अध्ययन में आर्य समाज के द्वारा जीवन के मुख्य क्षेत्रों में किये गये कार्यों का अध्ययन किया गया है।

कीवर्ड: –आर्यसमाज, जातिय भेदभाव, वैदिक ज्ञान परम्परा, राष्ट्रीय एकता, सम्पूर्ण विश्व को श्रेष्ठ बनाओ, सामाजिक–सांस्कृतिक क्षेत्र, धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्र।

परिचय: इस अनुसंधान कार्य में उत्तराखण्ड का जिला पौड़ी गढ़वाल के अन्तर्गत आने वाले विकासखण्ड पोखडा तथा वीरोंखाल को मुख्य रूप से सम्मलित किया गया है। अध्ययन हेतु कुल 150 उत्तरदाताओं का चयन साक्षात्कार के लिए किया गया है। अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची तथा द्वितीयक तथ्यों का उपयोग भी इस अध्ययन कार्य में किया गया है।

सारणी संख्या 01

आर्य समाज के कारण अध्ययन क्षेत्र में आई सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र उन्नतियों का अध्ययन

जीवन के क्षेत्र	हाँ		नहीं		उदासीन		कुल उत्तरदाता
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में	46	30.66%	05	3.33%	10	6.66%	150
आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में	33	22.00%	07	4.66%	09	6.00%	
धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में	27	18	06	4.00%	07	4.66%	

उपरोक्त सारणी में प्राप्त परिणामों में यह पाया गया कि आर्य समाज के माध्यम से सबसे अधिक उन्नति सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में हुयी के लिये हाँ/नहीं/उदासीन के सापेक्ष 30.66 प्रतिशत ने हाँ, 3.33 प्रतिशत ने नहीं तथा 6.66 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन रहे। वहीं आर्य समाज के माध्यम से उनकी सबसे अधिक उन्नति आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र के क्रम में 22 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ, 4.66 प्रतिशत ने ना तथा 6 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन पाये गये। आर्य समाज के माध्यम से उत्तरदाताओं की धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में अधिक उन्नति को लेकर 18 प्रतिशत ने हां, 4 प्रतिशत ने नहीं तथा 4.66 प्रतिशत उदासीन पाये गये। इन परिणामों

के विश्लेषण से यह तथ्य प्रकाश में आता है कि उत्तरदाताओं में आर्य समाज के माध्यम से सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, धर्म तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति हुयी है।

सारणी संख्या 02

अध्ययन क्षेत्र में आर्य समाज के माध्यम से हुयी धार्मिक तथा अध्यात्मिक उन्नति का अध्ययन

पूजा हवन करने के क्षेत्र में	हाँ		नहीं		उदासीन		कुल उत्तरदाता
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
जनेऊ यज्ञोपवीत संस्कार करने के क्षेत्र में	56	37.33%	10	6.66%	9	6.00%	150
वैदिक रीति रिवाजों को अपनाने के क्षेत्र में	37	24.66%	17	11.33%	21	14.00%	

सारणी संख्या 02 के परिणामों में पाया गया कि आर्य समाज के माध्यम से हुई धार्मिक तथा अध्यात्मिक उन्नति के सन्दर्भ में 56 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने हाँ का उत्तर दिया। जबकि 9 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन रहे और 6.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने वैदिक रीति रिवाजों को अपनाने के क्षेत्र में हाँ का उत्तर दिया। 11.33 प्रतिशत ने इस सन्दर्भ के सापेक्ष नहीं का उत्तर दिया। जबकि 14 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने कोई उत्तर नहीं दिया कि आर्य समाज के माध्यम से हुयी धार्मिक तथा आध्यात्मिक उन्नति हुयी। परिणामों का विश्लेषण करने पर स्थिति स्पष्ट होती है कि अनुसंधान क्षेत्र में आर्य समाज के माध्यम से धार्मिक तथा आध्यात्मिक उन्नति हुई है। परन्तु यह सत प्रतिशत के अन्तर्गत नहीं है।

सारणी संख्या 03

आर्य समाज के माध्यम से शिक्षा प्राप्ति को लेकर हुयी जागरूकता प्रेरणाओं का अध्ययन

	आवृति	प्रतिशत	कुल उत्तरदाता
अपने बच्चों को अनिवार्य रूप से स्कूल भेजने तथा पूर्ण शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रेरणा जागरूकता प्राप्त हुयी	113	75.33%	150
अपनी बालिकाओं को भी आवश्यक रूप से स्कूल भेजने की प्रेरणा प्राप्त हुयी	37	24.66%	

उपरोक्त सारणी संख्या 03 में परिणामों में यह पाया गया कि आर्य समाज के माध्यम से शिक्षा प्राप्ति को लेकर जागरूकता और प्रेरणाओं के अन्तर्गत 75.33 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने

स्वीकार किया कि उन्हें अपने बच्चों को अनिवार्य रूप से स्कूल भेजने तथा पूर्ण शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रेरणा जागरूकता प्राप्त हुयी। जबकि 24.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें इस माध्यम से अपनी बालिकाओं को भी आवश्यक रूप से स्कूल भेजने की प्रेरणा प्राप्त हुयी। निष्कर्ष के रूप में यह पाया गया कि अनुसंधान क्षेत्र में आर्य समाज के माध्यम से शिक्षा प्राप्ति हेतु जागरूकता, प्रेरणा प्राप्त हुयी।

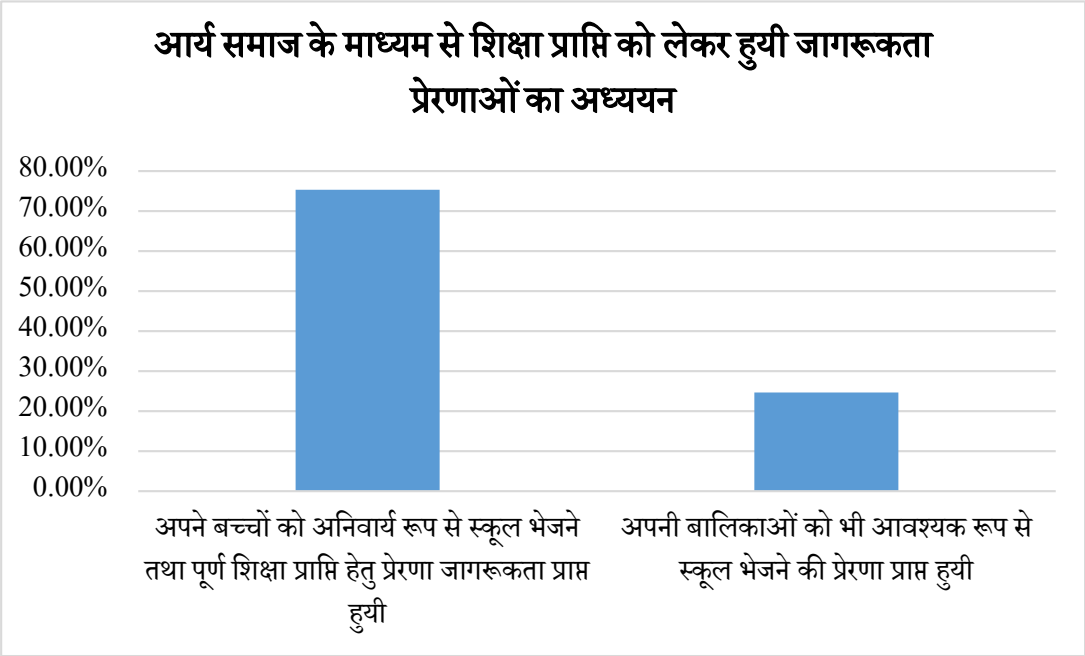

अध्ययन क्षेत्र में आर्य समाज में माध्यम से समाप्त या बन्द कराई गई कुरूतियों, कुप्रथाओं का अध्ययन

सारणी संख्या 04

आर्य समाज के द्वारा से बन्द कराई गई या समाप्त कराई गई कुरीतियों का विवरण

	आवृति	प्रतिशत	कुल उत्तरदाता
देव पूजन में बलि प्रथा का बन्द करने का कार्य किया गया	67	44.66%	150
मद्यपान, मांस, मदिरा सेवन को बन्द करने का कार्य किया गया	69	46.00%	
जातिगत भेदभाव तथा छुआछूत को बन्द करने का कार्य किया गया	14	9.33%	

सारणी संख्या 04 में प्राप्त परिणामों का विश्लेषण करने पर यह पाया कि आर्य समाज के द्वारा बन्द या समाप्त की गई कुरीतियों में से 44.66 प्रतिशत उत्तरदाता देव पूजन में बलि प्रथा को बन्द करवाने का कार्य किया से सहमत हैं। वहीं इस सन्दर्भ में 46.00 प्रतिशत उत्तरदाता जातिगत भेदभाव तथा छुआछूत को बन्द कराने के कार्यों से सहमत हैं। प्राप्त परिणामों के विश्लेषण के अनुसार यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अध्ययन क्षेत्र में आर्य समाज के द्वारा सामाजिक कुरीतियों को किसी न किसी रूप में कम या समाप्त किया गया है।

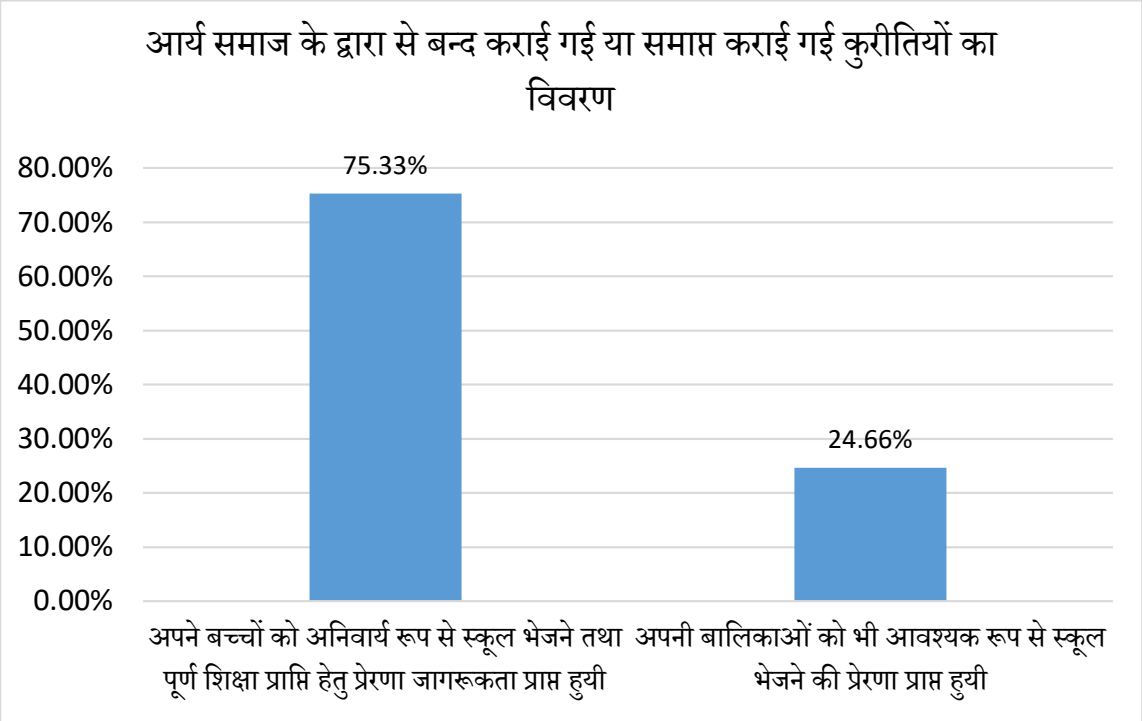

सामाजिक परिवर्तन के परिणामस्वरूप चोपड़ाकोट के ग्रामीण समाज में सामाजिक समरसता की वर्तमान तथ परम्परागत स्थिति का अध्ययन

सारणी संख्या 05

आर्य समाज के योगदानों का विवरण

	हाँ		नहीं		उदासीन		कुल उत्तरदाता
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	
हिन्दू धर्म की एकता को कायम रखने में	48	32.00%	00	00	3	2.00%	150
हिन्दू धर्म के वास्तविक तथा वैदिक परम्परा को संरक्षित करने के सन्दर्भ में	49	32.66%	00	00	8	5.33%	
सामाजिक	37	24.66	00	00	5	3.33	

सद्भावना समरसता, राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने के सन्दर्भ में							

अध्ययन क्षेत्र में आर्य समाज का हिन्दू धर्म में योगदान को लेकर उत्तरदाताओं के विचार, दृष्टिकोण को लेकर प्रश्न पूछने पर 32.00 प्रतिशत ने यह उत्तर दिया कि आर्य समाज ने उनके क्षेत्र में हिन्दू धर्म की एकता को कायम रखने में योगदान दिया है। जबकि 2 प्रतिशत उत्तरदाता इस विषय के सापेक्ष उदासीन रहे। 32.66 प्रतिशत के अनुसार आर्य समाज का योगदान हिन्दू धर्म के वास्तविक तथा वैदिक परम्परा को संरक्षित रखने में दिया है। 5.33 प्रतिशत उत्तरदाता उदासी रहे। 24.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सामाजिक सद्भावना, समरसता, राष्ट्रीय एकता को बनाये रखने में आर्य समाज ने योगदान दिया, वहीं इस प्रश्न के लिए 3.33 प्रतिशत उत्तरदाता उदासीन रहे। निष्कर्षतया यह स्पष्ट होता है कि हिन्दू धर्म के लिए एवं राष्ट्रीय एकता के लिए आर्य समाज ने कार्य किया।

सारणी संख्या 06

अध्ययन क्षेत्र में गौरक्षा का कार्य और आर्य समाज की भूमिका का अध्ययन

क्षेत्र में आर्य समाजियों के द्वारा गौरक्षा के क्षेत्र में किये गये कार्यों का विवरण

	हाँ		नहीं		कुल
	आवृति	प्रतिशत	आवृति	प्रतिशत	उत्तरदाता
आर्य समाजियों के द्वारा आपके क्षेत्र में गौरक्षा का कार्य प्रभावी रूप से किया गया।	150	100%	00	0.00%	150

सारणी संख्या 06 के परिणामों के सापेक्ष क्षेत्र में आर्य समाजियों के द्वारा गौरक्षा का कार्य प्रभावी रूप से किया गया हाँ की नहीं के विकल्प में सत–प्रतिशत उत्तरदाताओं ने यह कहा कि हाँ उनके क्षेत्र के कार्य समाजियों के द्वारा गौरक्षा का कार्य किया गया।

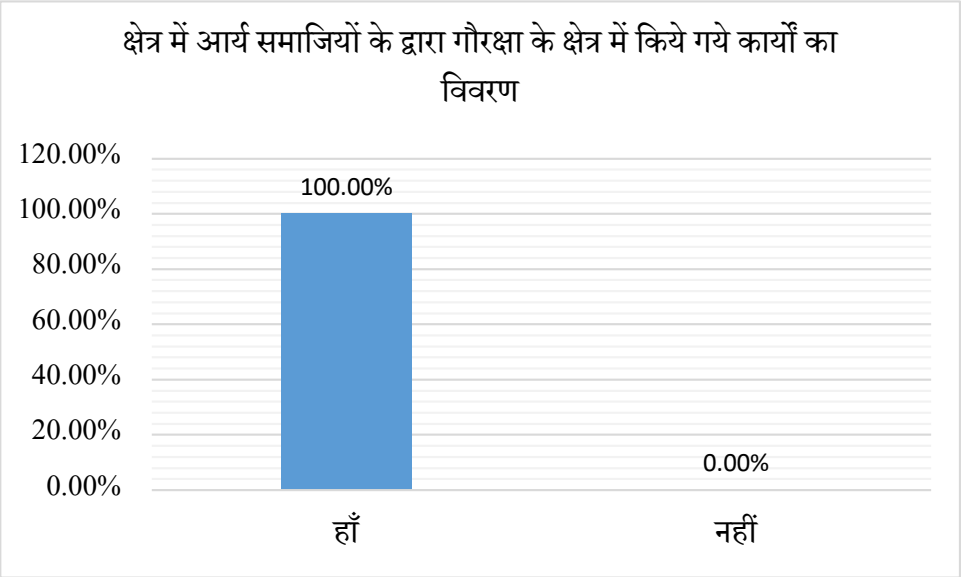

निष्कर्ष–प्रस्तुत अनुसंधान कार्य शीर्षक अनुसूचित जातियों की सामाजिक प्रस्थिति उन्नयन में आर्य समाज की भूमिका का समाजशास्त्रीय अध्ययन (विकासखण्ड पोखडा – वीरोंखाल के सन्दर्भ में) के अन्तर्गत अध्ययन करने पर सारणी संख्या 01 से सारणी संख्या 06 तक प्राप्त परिणामों का विश्लेषण करने पर निष्कर्ष पाया गया कि आर्य समाज के माध्यम से उनके क्षेत्र की अनुसूचित जातियों में सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक एवं राजनीतिक, धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में उन्नति हुयी है। धर्म एवं आध्यात्मिक क्षेत्र में सबसे अधिक उन्नति जनेऊ, यज्ञोपवीत संस्कार करने के क्षेत्र में हुयी। आर्य समाज की शिक्षाओं के माध्यम से सबसे अधिक शैक्षिक उन्नयन अपने बच्चों को अनिवार्य रूप से स्कूल भेजने तथा पूर्ण शिक्षा प्राप्ति हेतु प्रेरणा, जागरूकता प्राप्त हुयी, उत्तरदाताओं ने यह भी कहा कि आर्य समाज की प्रेरणा से उन्हें अपनी बालिकाओं को भी आवश्यक रूप से स्कूल भेजने की प्रेरणा मिली। अध्ययन में पाया गया कि आर्य समाज की शिक्षा से उनके क्षेत्र में देवपूजन में बलि प्रथा को बन्द कराने का कार्य किया और मद्यपान निषेध, जातिगत भेदभाव आदि को लेकर सुधार आया तथा बन्द भी किया गया। इसके साथ ही इस संस्था के माध्यम से हिन्दू धर्म की एकता, हिन्दू धर्म की वास्तविक तथा वैदिक परम्परा को संरक्षित करने का और सामाजिक सद्भावना, समरसता, एकता को बनाये रखने का योगदान दिया गया तथा इन क्षेत्रों में अधिक जागरूकता आयी है। उत्तरदाताओं ने यह व्यक्त किया कि क्षेत्र के आर्य समाजियों के द्वारा गौरक्षा के क्षेत्र में प्रभावी रूप से कार्य किया गया। अन्तिम रूप से अध्ययन में यह तथ्य सम्मुख आया है कि आर्य समाज के माध्यम से अनुसूचित जाति के लोगों का नैतिक, आध्यात्मिक शैक्षणिक, आर्थिक एवं राजनीतिक विकास हुआ और उनके सामाजिक जीवन और सामाजिक प्रस्थिति में उन्नति हुयी है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :–

- आकोफ आर. एस. – द डिजाईन ऑफ सोसियल रिसर्च।
- मोजर सी0 ए0 – सर्वेक्षण मैथड्स इन सोसियल इन्वेस्टीगेशन – लन्दन।
- शर्मा, डी.डी. मनीषा – उत्तराखण्ड का सामाजिक एवं साम्प्रदायिक इतिहास, ISBN - 978-81-7988-104-0 अंकित प्रकाशन हल्द्वानी।
- वसु– दुर्गादास – भारत का संविधान एक परिचय, ISBN : 978-93-5143-480-1 लैक्सिस नैक्सिस प्रकाशन।
- बनर्जी. डी. पॉवर्टी क्लास एण्ड हेल्थ कल्चर इन इंडिया – नई दिल्ली।
- भट्ट अनिल – कास्ट क्लास एण्ड पॉलिटिक्स मनोहर बुक डिपो नई दिल्ली।
- नोटियाल शिवानन्द – तपोभूमि गढ़वाल।
- दनोशी वी. एल. – गढ़वाल के शिल्पकारों का इतिहास, विनसर पब्लिकेशन देहरादून।

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation